**Final Report of theMRP(H)-0387/12-13/KLKA004/UGC-SWRO dated 29/03/2013**

On

# Relevance of Translation in Contemporary Period: A Critical Reasoning of Selected Works of Hindi-Malayalam Literary Translation in Socio Cultural Aspects

**Submitted by**

**Dr. Smitha.R.Nair**
**Assistant Professor**
**Department of Hindi**
**Pazhassi Raja N.S.S. College,**
**Mattanur, Kannur**

**to**

**University Grants Commission**

# समकालीन दौर में अनुवाद की प्रासंगिकता : सामाजिक एवं सांस्कृतिक आयामों से मलयालम में अनूदित हिन्दी साहित्य के चयनित औपन्यासिक ग्रन्थों का आलोचनात्मक अध्ययन

# Declaration

I hereby declare that this report is an authentic record of work carried out by me under UGC Minor Research Project, MRP(H)-0387/12-13/KLKA004/ UGC- SWRO dated 29/03/2013 on "**Relevance Of Translation in Contemporary Period: A Critical Reasoning of Selected Works of Hindi-Malayalam Literary Translation in Socio Cultural Aspects**"

Dr. Smitha.R.Nair
Assistant Professor
Department of Hindi
Pazhassi Raja N.S.S. College,
Mattanur, Kannur, Kerala
Pin – 670702

# अनुक्रमणिका

पुरोवाक पृष्ठ संख्या

पहला अध्याय 1 - 6

1.0 अनुवाद के **विभिन्न** आयाम

1.1 अनुवाद का इतिहास
1.2 अनुवाद और सांस्कृतिक विचारधारा

दूसरा अध्याय 7 - 17

2.0 अनुवाद के सामाजिक -सांस्कृतिक परिस्थितियाँ

2.1 भारत में अनुवाद की परंपरा
2.2 अनुवाद में सामाजिक और सांस्कृतिक एकीकरण
2.3 हिन्दी और मलयालम के अनुवाद परंपरा
2.4 अनुवाद की प्रासंगिकता
2.5 अनुवाद की व्यावहारिकता और उपयोगिता

तीसरा अध्याय 18 - 21

3.0 पाठ परिचय

3.1 रंगभूमि-उपन्यास
3.2 कर्मभूमि-उपन्यास
3.3 आधा गाव-उपन्यास

चौथा अध्याय 22 - 51

4.0 चुनी हुई हिन्दी - मलयालम रचानाओ में सामाजिक सांस्कृतिक धरातल पर सोच विचार

4.1 समस्याएँ

4.1.1 रंगभूमि
4.1.2 कर्मभूमि
4.1.3 आधागाँव

4.2 समानताएँ

4.2.1 रंगभूमि
4.2.2 कर्मभूमि
4.2.3 आधागाँव

पाँचवाँ अध्याय 52 - 56

5.0 बहुभाषिक बहुसांस्कृतिक समाज में अनुवाद की प्रासंगिकता

5.1 भाषापरक अध्ययन
5.2 मुहावरे तथा लोकोक्तियॉ

उपसंहार 57 - 60

सन्दर्भ सहायक ग्रन्थ सूची 61 - 64

# पुरोवाक्

साहित्य समाज की इकाई है । मानव समाज के सदस्य है । साहित्य और मानव के संबंध को जोडनेवाली भाषाई प्रक्रिया है अनुवाद । विश्वमानवीयता को साकार करने में अनुवाद अपना दायित्व निभाते है । समय की ज़रूरत पर अनुवाद प्रक्रिया में जाने - अनजाने होनेवाले परिवर्तनों को सामाजिक, सांस्कृतिक घरातल के आधार पर परखने की कोशिश की है । भारत जैसे बहुभाषी देश में नानात्व में एकत्व लाने की ओर अनुवादकीय कार्य होना चाहिए ।

प्रत्येक देश की भाषा की अपनी संस्कृति होती है । संस्कृति और समाज का अभिन्न अंग है । इसलिए समकालीन संदर्भ में अनुवाद पर विचार करते वक्त संस्कृति और समाज पर ध्यान देना अति आवश्यक है ।

अध्ययन की सुविधा केलिए इसे पाँच अध्यायों में बाँटा है ।

पहला अध्याय है "**अनुवाद के विभिन्न आयाम**" यहाँ भारत जैसे एक बहुभाषिक देश में अनुवाद के महत्व, अनुवाद में संस्कृति की देन आदि पर विचार किया है ।

दूसरा अध्याय भी पहले अघ्याय की कडी के रूप में अनुवाद के सैद्धान्तिक परंपरा को परखने का प्रयास है । उसका शीर्षक है - "**अनुवाद के सामाजिक सांस्कृतिक परिस्थितियाँ** " । यहाँ अनुवाद के उद्भव से लेकर आज तक के विकास यात्रा की संक्षिप्त चर्चा की है । साथ ही हिन्दी और मलयालम के अनुवाद परंपरा, अनुवाद की वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता आदि पर विचार किया है । आजकल एक संपर्क साधन के रूप में अनुवाद की व्यावहारिकता बढती जाती है । इसकी सूचना यहाँ मिलती है ।

तीसरा अध्याय है "**पाठ परिचय**" । यहाँ मूल एवं अनूदित कृति के बारे में विचार किया है । साथ ही मूल लेखक एवं अनुवादक के दायित्व पर भी सोच - विचार किया है ।

iii

चौथा अध्याय है "**चुनी हुई हिन्दी - मलयालम रचनाओं में सामाजिक सांस्कृतिक धरातल पर सोच विचार** " । यहाँ मूल और अनुवाद की समस्यायें ,और अनुवाद की समस्याएँ - समानताएँ आदि का विस्तृत विवेचन किया है । यहाँ प्रेमचंद के रंगभूमि, कर्मभूमि एवं राही मासूम रज़ा के आधागाँव पर विशेष रूप से विचार किया है । एक भाषाई व्यवस्था को दूसरी भाषा की व्यवस्था में अनुवाद करते वक्त सामाजिक, सांस्कृतिक परिसर में बदलाव आती है । यह बदलाव अनुवाद में किस तरह चित्रित है - इसका विचार किया गया है । साथ ही धार्मिक एवं देशीयता का अवबोध भी प्राप्त होते है ।

पाँचवाँ अध्याय है "**बहुभाषिक बहुसांस्कृतिक समाज में अनुवाद की प्रासंगिकता** " । यहाँ भारत जैसे बहुसास्कृतिक समाज में अनुवाद द्वारा किस तरह ऐक्य स्थापित होता है , इसकी सूचना यहाँ मिलती है । अनुवाद का प्रसंग पूर्णतः भाषागत प्रक्रिया होने के कारण हर रचना का शैलीगत विश्लेषण भी यहाँ किया गया है ।

उपसंहार में इस अध्ययन व विश्लेषण से रूपायित बिदुओं को संक्षेप में रखने का प्रयास किया है ।

इस शोधकार्य समाप्त करने में पि आर एन एस एस कॉलेज मट्टन्नूर के अधिकारियों के प्रति में आभार प्रकट करती हूँ । साथ ही भूतपूर्व प्राचार्य महोदय श्री. पि. मुरलीधरन और वर्तमान प्राचार्य महोदया डॉ. टी. एल. रमादेवी के प्रति में आभार हूँ । पुस्तकालय के बंधुओं को भी आभार व्यक्त करना चाहती है । इस शोध कार्य में पूर्ण सहायता देनेवाले डॉ. प्रमीला के. पी के प्रति में आभार प्रकट करती हूँ । मेरे पति और बेटी ने ही इस कार्य में हमेशा मेरा मानसिक सहयोग दिया है । उनके प्रति में आभारी हूँ । मेरे माता - पिता के मानसिक सहयोग केलिए में उसे प्रणाम करती हूँ । परिवार के अन्य सदस्यों को भी याद करती हूँ ।

त्रुटियों की क्षमा प्रार्थी

**स्मिता . आर . नायर**

प्रिन्सिपल इन्वेस्टिगेटर

## पहला अध्याय

# 1.0 अनुवाद के विभिन्न आयाम

भारत जैसे एक बहुभाषिक देश में विभिन्न भाषा बोलनेवाले बहुत सारे लोग एकसाथ रहते है। इसी एकसूत्रता कोकायम रखने में अनुवाद का महत्व दिन ब दिन बढता जा रहा है। साथ ही मानव के आन्तरिक विचारों और धारणाओं को एक विचार विनिमय के उपकरण के रूप में अनूदित करने की हज़ारों सालों से हुई तीव्र अभिलाषा और प्रयत्न के फलस्वरूप ही भाषा आर्विभूत हुई। अपने विचारों के अनुवाद को ही हम भाषा कहते है । एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद इसी मूलभूत प्रक्रिया की कडी है। प्राचीनकाल से ही भाषा, अनुवाद के माध्यम से विश्व के कोने-कोने में पहूँच गये थे। भारत से विदेशी भाषाओं में व विदेशी भाषाओं से भारतीय भाषाओं में अनुवाद की लंबी परंपरा विकसित हुई। अनुवाद के क्षेत्र में ईसाई मिशनरियों तथा सूफी संतों का योगदान महत्वपूर्ण है। शिक्षा, कला , संस्कृति, दर्शन ,संतों का स्थान महत्वपूर्ण है ।

## 1.1 अनुवाद का इतिहास

अनुवाद का प्रचलन भारत में वैदिक काल से ही था । अनुवाद के द्वाराइतिहास, परंपरा, साहित्य़, राजनीति, अर्थतत्र अन्ताराष्ट्रीय संबन्ध आदि के साथ मानव - मानव के बीच में वर्तमान समस्त असमानताओं का खुलासा किया जा सकता है । असमानताओं का अघ्ययन हमेशा प्रासंगिक है, क्योंकि बोली, भाषा, प्रदेश, धर्म, जाति, नस्ल, लिगं, वर्ग आदि के आधार पर होनेवाले समस्त अत्याचारों को हम मानवता के विरोधी मानते है । हर रचनाकार की अलग शैली होती है । अनुवाद में कभी-कभी मूल लेखक की शैली से बहत्तर वर्चस्व अनुवादक की शैली कायम करती है ।

अनुवाद एक ऐसा सेतु है, जो ज्ञान के आदान प्रदान का मार्ग प्रशस्त करता है । भारत जैसे बहुभाषिक देश में भाषाओं को मिलाने की प्रक्रिया अनुवाद द्वारा संपन्न होते है । " सूसन बासनेट ने इसको सम्मेलन की प्रक्रिया मानी है, जिसमें दो प्रदेश केलोग अपने नानान्व को भूलकर एक ही व्यापक संस्कृति का अंग बनकर सहजीवन केलिए तैयार होते है ।"[1]

## 1.2अनुवाद और सांस्कृतिक विचारधारा

भारतीय परिप्रेक्ष्य को देखा जाए तो पता चलता है की भारोपीय भाषाओं के विकास के साथ अनुवाद का विकास भी होता रहा । अधिकाँश आधुनिक भारतीय भाषाओं ने अपनी महत्वपूर्ण साहित्यिक परंपरा का शुभारंभ संस्कृत की रचनाओं के अनुवाद से किया था । देशीय एकता के साथ भाषाई विभिन्नता के महत्व से लोग अनुवाद द्वारा ज्ञात होते है । संस्कृतिक और राजनैतिक ध्येय प्राप्त करने केलिए देश की समस्त भाषाओं का योगदान रहा था ।

बहुभाषा व्यवस्था में अनुवाद प्रक्रिया के विभिन्न आयामी प्रयोग मिलते है । मूल कृति के शब्दों को लक्ष्य भाषा में उसी रूप में इस्तेमाल करने से मूल भाषा के अधीशत्व की स्वीकृति नज़र आते है । भारतीय रचनाओं में प्रयुक्त अंग्रेज़ी शब्द इसका उदाहरण है । सकारात्मकदृष्टि में यह संबन्ध विश्व के सांस्कृतिकसहजीवनकोबरकरार रखने के पक्ष में है । स्रोत भाषा के सांस्कृतिक संदर्भ में प्रयुक्त शब्द को लक्ष्य भाषा में अनुवाद करते

समय, धार्मिक विचार, सामाजिक रीतिरिवाज़ और संस्कृति के संदर्भ में समस्या उत्पन्न होते है ।

अनुवाद में हम भाषाओं का नहीं संस्कृति का रूपान्तरण करते है ।"षेरीसाइमणकेअनुसारअनुवादमेंसांस्कृतिकपहचानसदैवएकप्रकारकीसमझौतावादीप्रवर्ती है"[2] विश्वमानवीयता को ऐतिहासिक दृष्टि प्राप्त करने में प्रत्येक देश की भाषा ओर संस्कृति की अपनी देन होती है । वैश्विक स्तर पर जनता के बीच परिलसित समान मानवीय संवेदनाओं को ही मानवीय संस्कृति बताई जाती है । संस्कृति का मेलजोल भाषाओं के माध्यम से ही संभव होते है । प्रात्येक देश की भाषाएवं संस्कृति, वहाँ के जनतांत्रिक, सामाजिक मूल्यों के विस्तार और वैश्विक समन्वय की सूचना अभिहित करती है । इस तरह भाषाओं का आदान - प्रदान ज़रूरी बन जाता है ।

भारतीय संदर्भ में विशेषकर बहुभाषीय देश होने के कारण अनुवाद की महत्ता आवश्यक है । अनुवाद की परंपरा देश के

ऐतिहासिक विकास के साथ जुडी रचनात्मक प्रक्रिया है । भारत जैसे नानात्व वाले देश में विभिन्न भाषाओं के बीच अनुवाद द्वारा ही अखिल भारतीय परिकल्पना परिपुष्ट हो गई । सांस्कृतिक विविधता के कारण विनिमय की प्रक्रिया के रूप में सभी मुख्य भारतीय भाषाओं के बीच में अनुवाद की प्रक्रिया होती है ।

अनुवाद के भाषावैज्ञानिक सबन्धी विचारधारा के साथ साथ संस्कृति सबन्धीविचारधारा की महत्ता भी दिन ब दिन बढता जाता है ।" संस्कृति की प्रगति वस्तुतः अनुवाद रुपी धुरी पर केन्द्रित है ।"[3]संस्कृति सबन्धी दो मूल धाराएँ यानी मानवीय धारणा(Humanistic Concept) और नरवंशशास्त्रीय धारणा (Anthropological) संस्कृति सबन्धी मानवीय धारणा साहित्य, संगीत और कला से मिलता है । नरवंशशास्त्रीय धारणा यानी एक सामूहिक जीवन की संपूर्ण झाँकी । यह परंपरा से जुडी हुई, जीवन के बाह्य और आंतरिक जीवन रीति द्वारासंस्कृति पूर्ण जनता के स्वभाव में परिवर्तन लाने योग्य है । सांस्कृतिक अवबोध द्वारा व्यक्ति अपनी संस्कृति की पहचान कर पाती है । संस्कृति समाज से संबंधित है जिसके द्वारा मानवीय प्रवृत्तियों को

मार्ग और समाज के सदस्यों द्वारा पारंपरिक विशेषताओं का प्रस्तुतीकरण संभव है। विशिष्ट सांस्कृतिक परंपरा के लोग हमेशा भाषा द्वारा अपने समाज व सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व से प्रेरणा पाते है ।

---

1. Basnett Susan ,Translation Studies, P.4
2. Godard Barbara, Culture as Translation Ramakrishna Shantha(ed) P.159, Cultural identity as a process of negotiation is constantly in process.
3. डॉ अग्रवाल कुसुम,अनुवाद शिल्प समकालीन सन्दर्भ ,पृ.16

**दूसरा अध्याय**

# 2.0 अनुवाद के सामाजिक -सांस्कृतिक परिस्थितियाँ

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है । समाज से संपर्क स्थापित करने में अनुवाद महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है ।विश्व विभिन्न भाषाओ का संग्रहालय है ।अनुवाद के माध्यम से ही विश्व साहित्य का निर्माण एवं विकास हुआ है ।

## 2.1भारत में अनुवाद की परंपरा

भारत में अंग्रेज़ी राज की स्थापना के फलस्वरूप 18 वीं सदी में भारत और परिचम के बीच संपर्क स्थापित हो सका । अनेक विदेशी लोग भारतीय कृतियों का अनुवाद  अपनी भाषा में किया । इसी अनुवाद प्रक्रिया में ईस्ट इंडिया कंपनी और कलकत्ता के फार्ट विलियम कालेज  अपना हिस्सा निभाया है । विदेशी भाषा की कृतियों का अनुवाद भारतीय भाषाओं में भी होने लगा । बाइबल का अनुवाद इसका उदाहरण है । इससे पहले भारत में अनुवाद की परंपरा शुष्कनज़र आते है । हिन्दी में व्यवस्थित रूप से अनुवाद का कार्य महाभारत,

भागवत, पुराण, गीता, पंचतंत्र आदि ग्रन्थों के अनुवाद द्वारा संभव हुआ । आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, श्रीधरपाठक, गुप्त आदि का नाम यहाँ विशेष उललेखनीय है ।

भारतीय ग्रन्थों के परिचमी अनुवाद में सर विलियम जोन्स का अभिज्ञान शाकुंतलम का अनुवाद विशेष महत्वपूर्णहै । सर चाल्स विलिकिस ने भगवद्गीता का अंग्रेज़ी अनुवाद प्रस्तुत किया । जर्मन, फ्रेंच और रूसी भाषाओं में भी बडी मात्रा में अनुवाद कार्य होता है ।

भारत जैसे बहुभाषा देश में विभिन्न भाषा बोलनेवाले बहुत सारे लोग एक साथ रहते है । इसी नानात्व में एकत्व स्थापित करनेवाले एक संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी का उपयोग धीरे धीरे होने लगा । भारत एक बहुसांस्कृतिक प्रदेश भी है । हमारे सांस्कृतिक महत्व के प्रतिनिधि ग्रथों का अनुवाद विदेशी भाषाओं में होगयी । उदाः मैक्समूलर, मैकडनल जैसे लोगों ने संस्कृत के वैदिक ग्रथों का अनुवाद किया था ।

## 2.2 अनुवाद में सामाजिक और सांस्कृतिक एकीकरण

अनुवाद और संस्कृति का संबध बहुत पुराना है । संस्कृति का व्युत्पत्तिपरक अर्थ है सम् कृती य़ानी मानवताको सतत भौतिक और आध्यात्मिक विशिष्टता प्रदान करनेवाले उत्तम अभिव्यक्तियाँ । सांस्कृति में संस्कार, आचार-विचार, कार्य-कलाप, जीवन शैली और जीवन दर्शन का प्रभाव है । अनुवाद द्वारा संस्कृति की पहचान होती है ।

साहित्यिक अनुवाद का लक्ष्य एक भाषा की संस्कृति को दूसरी भाषा में बोधगम्य बनाना है । संस्कृति का अनुवाद काफी मुश्किल है । भारतीय साहित्य में अनुवाद और संस्कृति एक दूसरे को प्रभावित करते है । एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करते वक्त भाषा के साथ उसमें निहित स्रोत भाषा संस्कृति का भी अनुवाद करता है । यहाँ अनुवादक भाषा के व्यवधान को हटाकर दो भिन्न सांस्कृतिक परिवेशों में रहनेवाले व्यक्तियों के बीच संपर्क सेतू बनकर दोनों भाषाओं के कृतियों को आमने सामने खडा कर लेते है । “भाषा ध्वन्यात्मक प्रतीकों की व्यवस्था है और अनुवाद इन्हीं प्रतीकों का

प्रतिस्थापन ।[1]एक देश की संस्कृति वहाँ के इतिहास, भूगोल, कला, साहित्य, दर्शन, स्त्री-पुरुष संबंध, परंपरा आदि से जुडे है । मानव की सहज जिज्ञासा, उन्हें लक्ष्य भाषा संस्कृति से परिचय कराने में सफल होता है । मानव हमेशा नये व्यक्तियों, प्रदेशों और नई भाषाओं से संपर्क स्थापित होते है ।"समस्त ज्ञान विज्ञान और साहित्य को सम्पूर्ण मानवता की धरोहर बनाना अनुवाद द्वारा ही संभव है ।"[2]

भारतीय सस्कृति के विभिन्न आयाम है - सामाजिक, आर्थिक, ऐतिहासिक, राजनैतिक, मनोवैज्ञानिक, साहित्यिक और ललित कला संबन्धि । साहित्य और सस्कृति का संबंध अभिन्न है । जब स्रोत भाषा का कोई सांस्कृतिक उपादान लक्ष्य भाषा में प्राप्त नहीं है तो अनुवादक, मूल सस्कृति की परिभाषा या व्याख्या करके, शाब्दिक अनुवाद द्वारा, समतुल्य शब्द की खोज करके, नये शब्द के निर्माण करके और जोड - तोड के ज़रिए इसका समाधान कर लेता है ।

प्रत्येक भाषा की सस्कृति में धार्मिक विश्वास, परंपरा, दार्शनिक विचार, रहन-सहन, खान-पान, तीज-त्योहार, रीति-

रिवाज़ आदि बातें है । अनुवाद में यह बात समस्या उत्पन्न करते है । मनुष्य एक सामाजिक प्राणि है । उनकी सामाजिक व्यवस्था व्यक्त करनेवाला रिरते-नाते की शब्दावली साहित्य में कई जगहों पर पाये जाते है । भारतीय संस्कृति में संबंधों की नाजुकता और गरिमा को कायम करके यहाँ अनुवाद करना है, वरना सामाजिक व्यवस्था में टकरार पैदा होता है ।

प्रत्येक भाषा विशेष की रंग संबंधी अपनी शब्दावली होती है । अधिकाँश रंग सार्वभौमिक है । भाषा की सामाजिक प्रकृति से जुडे हुए मंगल सूचक शब्दों, चारित्रिक गुणों से युक्त शब्दों का अनुवाद भी चुनौती की बात है । मुहावरों और लोकोक्तियो के अनुवाद में प्रत्येक भाषा की सामाजिक - सांस्कृतिक परंपरा निहित होती है । स्रोत भाषा की संस्कृति की व्याख्या लक्षय भाषा में उपलब्ध प्रतीकों के माध्यम से करने के कारण अनुवाद को सांस्कृतिक संदर्भों का एकीकरण कहना उचित होगा । अनुवाद में अनुवादक के व्यक्तित्व, संस्कार और युगीन परिवेश की समझ भी उपलब्ध है ।

## 2.3 हिन्दी और मलयालम के अनुवाद परंपरा

हिन्दी में अनुवाद की परंपरा की शुरुवात् प्राचीन पौराणिक ग्रथों से शुरु होती है । 19 वीं सदी के उत्तरार्ध से हिन्दी में अनुवाद की परंपरा समृद्ध होने लगी । काव्य, नाटक, उपन्यास और कहानी के क्षेत्र में अनुवाद की वृद्धि हो गयी । इस समय के अनुवादकों में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, श्रीधर पाठक, प्रेमचदं, बच्चन आदि प्रमुख है ।

भारतीय भाषाओं के बीच अनुवाद करते वक्त बहुत सारे बातों पर ध्यान देना चाहिए । वर्तमान संदर्भ में हिन्दी अखिल भारतीय भाषा के स्तर पर पहूँच चुका है । मलयालम के कई ग्रथों का अनुवाद हिन्दी में और हिन्दी के ग्रथों का अनुवाद मलयालम में की गयी थी । हिन्दी और मलयालम भाषा के अनुवाद में तत्सम शब्दावली, व्याकरणिक समानता, अरबी, फारसी, अंग्रेज़ी, तुर्की जैसे विदेशी भाषा के शब्दों की भरमाल आदि उपलब्ध है । अपने व्यापारिक आवश्यकता केलिए विदेशी लोग केरल में भी आ गये थे । भाषाओं के मेलजोल से

उनके कुछ शब्द मलयालम के अपने हो गए थे । इसी तरह हिन्दी भाषा में भी विदेशी शब्दों का आधिक्य है । भौगोलिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और लोकतात्रिक प्रवृत्तियों से दोनों भाषाओं में अनेक मौलिक शब्द सुरक्षित है । मलयालम और हिन्दी के वातावरण में भिन्नता है । साथ ही आंचलिक और केरलीय संस्कृति के ध्योतक शब्दों का पर्यायवाची शब्द हिन्दी में मिलना प्रायः कठिन कार्य है । ऐसे संदर्भों में लिव्यंतरण का सहारा लेना पडता है ।

## 2.4 अनुवाद की प्रासंगिकता

वर्तमान संदर्भ में अनुवाद की प्रासंगिकता बहुत बढ गयी है । मुद्रण कला के विकास के साथ 20 वीं सदी से लेकर अनुवाद का अभूतपूर्व विकास हो गया । कई भारतीय भाषाओं से विशेषकर बंगला से कई ग्रथों का अनुवाद पाये जाते है । लेकिन उस समय अंग्रेज़ी के वर्चस्व को कायम करते हुए प्रथम अनुवाद अंग्रेज़ी में करने की तरीका प्रचलित थी । हिन्दी और मलयालम जैसी भाषाओं में भी यही स्थिति थी । बाद में हिन्दी की महत्ता बढ गयी और भारतीय

भाषाओं के अनुवाद सीधे हिन्दी में करने लगे । अनुवाद की गुणवत्ता को बरकरार रखने में साहित्य अकादमी जैसी संस्थाओ का योगदान महत्वपूर्ण है ।

आजकल अनुवाद के लिए भाषांतर, रूपांतर, परिभाषा, ट्रांसलेषन, तर्जूमा जैसे शब्दों का प्रयोग है । अनुवाद में रूपांतरण की प्रवृत्ति प्राचीन काल के रामायण, महाभारत, गीता पंचतंत्र आदि में है । पश्चिम की साहित्य कृतियों का अनुवाद भारतीय भाषाओं में अधिक मात्रा में मिलती है । बंगला के विख्यात कवि माइकेल मधुसूदन दत्त और टैगोर की कृतियों का अनुवाद भारतीय भाषाओं में होने लगे ।

हिन्दी की अनुवाद परंपरा में उर्दू भाषा का योगदान महत्वपूर्ण है । प्रेमचंद जैसे अनेक साहित्यकार उर्दू से अनुवाद करने लगे । प्रेमचंद का युग स्वाधीनता आंदोलन का युग था । हर भारतीय भाषा आपस में संपर्क स्थापित करते लगे । स्वतंत्रता के

बादहिन्दी भारत की संपर्क भाषा के रूप में विशेष मान्यता प्राप्त की थी । अनुवाद कार्य भी तेजी से होने लगा ।

## 2.5 अनुवाद की व्यावहारिकता और उपयोगिता

मानव - सभ्यता के विकास के साथ ही एक भाषा-भाषी समुदाय को जब दूसरे भाषा -भाषी समुदाय के बारे में जानने प्राप्त करने की जिज्ञासा उत्पन्न हुई,की ज़रूरत लगी तभी अनुवाद की आवश्यकता जाग्रत हुई । अतः मानव की सहज जिज्ञासा, उसकी सहज चेतना ही अनुवाद की आवश्यकता की मूल जड है । अनुवाद मानव सभ्यता के साथ ही विकसित एक ऐसी तकनीक है, जिसका आविष्कार बहुभाषिक स्थिति की विडंबनाओं से बचने केलिए किया गया ।

आज विज्ञान के युग में ज्ञान-विज्ञान का अंतरराष्ट्रीय स्वरूप विकसित होने के कारण संपूर्ण साहित्य को विश्व की लगभग सभी भाषाओं में अलब्ध कराना अनिवार्य हो गया है । समस्त ज्ञान-विज्ञान और साहित्य को संपूर्ण मानवता की धरोहर बनाना

अनुवाद द्वारा ही संभव है । अनुवाद के माध्यम से ही विश्व साहित्य का निर्माण एवं विकास हुआ है । आज भारतीय जनमानस में भारतीय संस्कृति को सुरक्षित रखने का श्रेय रामायण. महाभारत, गीता, पंचतंत्र जैसे अनुवादों को देना चाहिए । विश्व संस्कृति के विकास में भी अनुवाद का योगदान है । धर्म, दर्शन, साहित्य, शिक्षा, विज्ञान, प्रौध्योगिकी, वाणिज्य एवं व्यवसायअनुवाद से अभिन्न संबंध है । विश्व - बंधुत्व की इस भावना से मानव मानव के निकट आता है ।

आधुनिक भारत के नवोत्थान में पश्चिम का बहुत बडा हाथ रहा है । हर देश की राजनीति को समझने और जानने केलिए अनुवाद की उपयोगिता की जाती है । अनुवाद विभिन्न संस्कृतियों के बीच सेतू का कार्य किया है । भारत जैसे विकासशील देश केलिए अनुवाद की आवश्यकता और महत्ता को समझकर भारतीय भाषाओं को संविधान में सम्मिलित करके  हिन्दी को राज भाषा का दर्जा दिया है । आज हिन्दी मारिरास, फिजी, सूरिनाम, गुआन, दक्षिण आफ्रिका, नेपाल, म्याँमार आदि देशों की प्रमुख भाषा के रूप में तथा विभिन्न भारतीय

भाषाओं को जोडने वाली कडी के रूप में अनुवाद का एक व्यापक माध्यम बनती जा रही है ।

अनुवाद आज व्यक्ति की सामाजिक आवश्यकता बन गया है । एक संप्रेक्षण माध्यम के रूप में, संपर्क साधन के रूप में अनुवाद का महत्व है । अतः अनुवाद अपने प्रयोजन में बहुमुखी और बहुआयामी बन चुका है । "अनुवाद विश्व संस्कृति और विश्व बंधुत्व में ऐक्य और साम्य स्थापित करने वाला एक ऐसा सेतू है जिसके माध्यम से विश्व ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में क्षेत्रीयतावाद के संकुचित और सीमित दायरे से बाहर निकलकर मानवीय एवं भावात्मक एकता के मूल केन्द्र - बिदूं पर पहूँच सकता है और यही अनुवाद की आवश्यकता और उपयोगिता का सराक्त एवं प्रत्यक्ष प्रमाण है ।"[3]साहित्य समाज का दर्पण है तो अनुवाद साहित्यिक एवं सांस्कृतिक उत्कृष्टता का परिचायक।

---

1. डॉ भोलानाथ तिवारी, अनुवाद विज्ञान,पृ. 16
2. डॉ अग्रवाल कुसुम ,अनुवाद शिल्प समकालीन सन्दर्भ, पृ. 12
3. डॉ अग्रवाल कुसुम ,अनुवाद शिल्प समकालीन सन्दर्भ, पृ. 19

**तीसरा अध्याय**

## 3.0 पाठ परिचय

हिन्दी के विख्यात् साहित्यकार प्रेमचंद की सर्वोत्कृष्ट कृति रंगभूमि और उसका मलयालम अनुवाद समकालीन संदर्भ में महत्वपूर्ण है । उपन्यासकार ने जिन सामाजिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों से गुज़रा है, उसका नंगा यथार्थ उपन्यास में प्रस्तुत है । मूलकृति और अनुवाद में परिवर्तन होना स्वाभाविक है । यहाँ हिन्दी प्रदेश के सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश के साथ साथ, मलयालम के सामाजिक , सांस्कृतिक धरातल का पर्दाफाश भी संभव है ।

## 3.1 रंगभूमि-उपन्यास

भारतीय जन - जीवन और सामाजिक समस्याओं के प्रति प्रगतिशील दृष्टिकोण रखनेवाले व्यक्ति थे प्रेमचंद । रंगभूमि उपन्यास का प्रमुख पात्र सूरदास भीख माँगने वाले दुर्बल, क्षीणकाय एवं सरल स्वभाववाले अन्धे व्यक्ति के रूप में भारत के दरिद्र नारायणों का प्रतिनिधित्व करता है । जिस सामाजिक वातावरण से कहानी गुज़रता

है, उसका यथार्थवादी चित्रण यहाँ उपलब्ध है । जिस प्रकार एक व्यक्ति महात्मा बन जाता है, उसका जीता जागता उदाहरणहै सुरदास । पाश्चात्य संस्कृति के प्रति झुकाव, एवं अर्थ के प्रति लालच आदि व्यक्ति को कठोर हृदयवाले बना देते है । उपन्यास के प्रभु सेवक एवं मिसेज सेवक इसका उदाहरण है ।

विनय और सोफिया के करूणाद्र प्रेम कथा, मिस्टर क्लार्क के साथ सोफिया की शादी, बाद में विनयसिंह की वीरमृत्यु और सोफिया का आत्मत्याग, आदि का सजीव चित्रण उपन्यास को आगे बढाते है ।

इसका अनुवाद श्री . इ . के . दिवाकरन पोटी द्वारा किया गया है । समाज में व्याप्त शोषण, एवं पश्चिमी संस्कृति की लालसा केरलीय जनजीवन में भी व्याप्त थी । मूलकृति की तरह अनुवाद में भी सामाजिक एवं सांस्कृतिक धरातल का अंकन किया गया है ।

## 3.2 कर्मभूमि-उपन्यास

प्रेमचंद के कर्मभूमि उपन्यास में भी समाज की कूरीतियों एवं विषमताओं पर करार प्रहार करते हुए, भारतीय जनजीवन के आईना बनकर सामने आती है । अमरकान्त और सुखदा के चरित्र के ज़रिए त्याग और स्नेह का यथार्थ अंकन किया गया है ।

कर्मभूमि का मलयालम अनुवाद श्री. इ. के . दिवाकरन पोटी द्वारा हुई है । कर्तव्य के प्रति जाग्रत, सामाजिक अवबोध रखनेवाली नारी के रूप में सुखदा आती है ।

## 3.3 आधागाँव-उपन्यास

राही मासूम रज़ा का आधा गाँव और उसका अनुवाद बिन्दु वेलसार का अर्धग्राम संस्कृति के विभिन्न पहल्लुओं का यथार्थवादी चित्रण किया था । ‘ मुहर ’ जैसे समय को सूचित करनेवाले शब्द के ज़रिए सारा उपन्यास आगे बढता है । प्रस्तुत कृति का अनुवाद भी इन समस्याओं को सही ढंग से चित्रित किया है । आधा गाँव के फुन्नन मियां और उसके परिवार एवं गंगौली के चरित्र का चित्रण किया

है । भारत पाक् विभाजन और अंग्रेज़ों के छाल का चित्रण उपन्यास के पात्रों के ज़रिए संभव है । जिस प्रकार सांप्रदायिक  दंगे फैलते है और समाज के हर व्यक्ति पर तनाव भरी मनोवृत्ति पैदा करती है , इसका उत्तर आधा गाँव द्वारा मिलते है ।

हर एक रचना अपने प्रदेश की सांस्कृतिक वातावरण को रूपायित करते है । भारतीय जनजीवन से जुडी यादगार बातों को अनुभवी आँखों से जांझने  परखने का कार्य मूलकृति और अनुवाद द्वारा संभव है ।

**चौथा अध्याय**

# 4.0 चुनी हुई हिन्दी -मलयालम रचानाओ में सामाजिक सांस्कृतिक धरातल पर सोच विचार

## 4.1 समस्याएँ

### 4.1.1 रंगभूमि

अनुवाद के ज़रिए सांस्कृतिक बदलाव का चित्रण रंगभूमि उपन्यास में यहाँ दिखायमान है । हिन्दी के सांस्कृतिक धरातल के शब्दों को मलयालम के सांस्कृतिक धरातल पर अनूदिन करते वक्त उत्पन्न समस्यायें रंगभूमि उपन्यास द्वारा यहाँ चित्रित है ।

उदा : कार्तिक का महीना (पृ . सं 5) - വൃശ്ചിക മാസം കാലം (പേജ് നമ്പർ – 9)

धुइयां का भुरता (पृ . सं 5) - ചേമ്പു ചമ്മന്തി (പേജ് നമ്പർ – 9)

दाता । भगवान् तुम्हारा कल्याण करें -(पृ . सं 6)

ധർമ്മം കൊടുക്കുന്നവരേ,
ദൈവം നിങ്ങൾക്കു നന്മ വരുത്തണ്ടേ (പേജ് നമ്പർ – 10)

मलयालम अनुवाद द्वारा ऐसे शब्दों को सुनने से हमारे मन में अपनी भाषा ओर सस्कृति के प्रति आत्मीय भावना उत्पन्न होती है । मलयालम के सांस्कृतिक संदर्भ में ' दाता के लिए ' 'ധർമ്മം കൊടുക്കുന്നവരേ'जैसे बदलकर दान के महत्व को उजागर करने की अनुवादकीय कोशिश यहाँ दिखायमान है ।

भारतीय संस्कृति को नगण्य मानकर पाश्चात्य संस्कृति को प्रमुखता देने की प्रवृत्ति रंगभूमि उपन्यास पर है । ईसाइयों के बारे में बताते वक्त हिन्दी प्रदेश के लोग मलयालम के सांस्कृतिक जगत में प्रयुक्त शब्दों से ज्ञात नहीं होते है ।

" ईसाईयों को तनिक भी दया धर्म का विचार नहीं होता । बस, सबको ईसाई ही बनाते फिरते है ।"(पृ . सं 11)

ഈ ക്രിസ്ത്യാനികൾക്കു ലവലേശം കാരുണ്യമില്ല.
അതെ സകലരെയും മാർക്കം കൂട്ടാൻ നടക്കുതയാണ്. (പേജ് നമ്പർ - 14)

मलयालम के सांस्कृतिक संदर्भ में पले हुए व्यक्ति 'മാർക്കം കൂട്ടുക' जैसे शब्द से परिचित होगे । हिन्दी के सांस्कृतिक संदर्भ को मलयालम के सांस्कृतिक संदर्भ में उतारने का अनुवादकीय कोशिश यहाँ दिखायमान् है ।

मि.जोंन सेवक द्वारा सूरदास के बारे में सूचित किए शब्दों से भारतिय सांस्कृति के प्रति ऋणा और पाश्चात्य संस्कृतिके प्रति लगाव नज़र आते है ।

मि. जोंन सेवक बोले - इस देश के सिर से यह बल न जाने कब टलेगी ? जिस देश में भीख मांगना लज्जा की बात न हो, यहां तक कि सर्वश्रेष्ठ जातिया भी जिसे अपनी जीवन-वृत्ति बना लें, जहां महात्माओं का एकमात्र यही आधार हो, उसके उद्धार में अभी शताब्दियों की देर है ।(पृ . सं 6)

ജോൺ – ഈ നാട്ടിലെ മണ്ണിൽ നിന്ന് ഈ ഉപദ്രവം
എന്നാണു നീങ്ങുക ? ഒരു നാട്ടിൽ ഭിക്ഷ യാചിക്കുന്നതു
ലജ്ജാകരമായിരിക്കരുതപ്പെടുന്നില്ലെങ്കിൽ, ഏറ്റവുമുയർന്ന
ജാതിക്കാരും അതൊരു ജീവിതവൃത്തിയാക്കിയിരിക്കുന്നു–
വെങ്കിൽ, നൂറ്റാണ്ടുകൾ കഴിഞ്ഞാലും ആ നാടിനഭിവൃദ്ധിയു–
ണ്ടാവുകയില്ല. (പേജ് നമ്പർ – 10, 11)

भारतीय संस्कृति में दान यानी भीख देना पुण्य की बात समझते है । लेकिन पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित मिस्टर जॉन की दृष्टि से भारतीय संस्कृति नगण्य है ।

विदेशी भाषा के शब्दों को उसीतरह इस्तेमाल करने की प्रवृत्ति भी यहाँ दिखायमान है ।

" हिन्दुओं ने ये बाते युनान के stoic से सीखी है । "
(पृ . सं 9)

" ഹിന്ദുക്കൾ ഈ തത്വങ്ങൾ യവനതത്വജ്ഞാനികളിൽ നിന്നാണ് പഠിച്ചിട്ടുള്ളത് " (പേജ് നമ്പർ – 14)

Pessimist(पृ . सं131) - പെസിമിസ്റ്റാണ് (പേജ് നമ്പർ – 150)

कभी कभी अगेज़ी शब्दों को मलयालम के सांस्कृतिक परिसर में उतारने की अनुवादकीय कोशिश भी है ।

उदा : Sentimental (पृ . सं 225) – വികാരജീവി (പേജ് നമ്പർ – 254)

भारत के महापुरुष, इतिहास और चरित्र को अनदेखा करने की प्रवृत्ति मूलकृति और अनुवाद में पाए जाते है । प्रभुसेवक का कथन इसका उदाहरण है ।

" हरिश्चन्द्र योगी नहीं थे, कृष्ण त्यागी नहीं थे, नेपोलियन योगी नहीं था । (पृ . सं 75)

ശ്രീരാമനും ശ്രീകൃഷ്ണനും യോഗികളായിരുന്നില്ല
നെൽസണും നെപ്പോളിയനും ത്യാഗികളായിരുന്നില്ല
(പേജ് നമ്പർ – 88)

राजाहरिश्चन्द्र के सत्य और त्याग भावना को कम दिखाने की कोशिश मूलकृति में है ।

ठाकूर - उसका अकवाल भारी है, वह कभी चक्की न पीसेगा
(पृ . सं 271)

താക്കൂർ – അവന്റെ തലക്കുറി നല്ലതാണ്.
അവനൊരിക്കലും ചക്കാട്ടാൻ പോകേണ്ടി വരില്ല. (പേജ് നമ്പർ - )

मलयालम के संस्कृति से जुडे हुए बात है 'ചക്കാട്ടുക' । हिन्दी भाषी लोग चक्की पीसने से अधिक परिचित है । यह सांस्कृतिक अंतर मूल और अनुवाद में द्रष्टव्य है ।

रंगभूमि उपन्यास में एक ओर जगह पर भी यह दिखायमान् है । पुरानी जागीर है (पृ . सं 233)-

പണ്ടത്തെ ജാഗീറാണ്
കരമൊഴി ഭൂമി (പേജ് നമ്പർ – 263)

मूलकृतिमें सुभागी के कथन द्वारा सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ में अन्तर व्यक्त है ।

उदा : जन्म भर कुमार ही बने रहोगें(पृ . सं 265)

ജീവിതകാലം മുഴുവൻ ഇങ്ങനെ ഒറ്റത്തടിയായിട്ടിരിക്കുമോ
(പേജ് നമ്പർ – 245)

यहाँ 'कुमार ' शब्द के लिए अनुवादक 'ഒറ്റത്തടി' जैसे शब्द का प्रयोग किया है । केरल के सामूहिक जीवन से धनिष्ठ संबंध रखनेवाला शब्द है 'ഒറ്റത്തടി'। ऐसे शब्द के प्रयोग द्वारा भाषा के कठिन शब्द से अपरिचित आम आदमी भी आसानी से समझ लेगें ।

सुरदास , सोफिया और मिसेज सेवक के बीच वार्तालाप और सोफिया को देनेवाले उत्तर यहाँ देखिए - मेंम साहब, अपने पापों का प्रायश्चित हमें आप करना पडता है । अगर आज मालुम हो जाए कि किसी ने हमारे पापों का भार अपने सिर ले लिया तो संसार में अन्धेर मच जाए (पृ . सं 9)

നമ്മുടെ പാപങ്ങൾക്കു നാം തന്നെ പ്രായശ്ചിത്തം ചെയ്യണം കൊച്ചമ്മേ. നമ്മുടെ പാപങ്ങളുടെ ഭാരം മറ്റൊരാൾ തലയിലേറ്റാൻ തയ്യാറുണ്ടെങ്കിൽ പിന്നെ ലോകത്തിൽ തോന്നിവാസമേ നടക്കുകയുള്ളു. (പേജ് നമ്പർ 13)

यहाँ भी केरल के सामूहिक जीवन से मिले जूले शब्द का प्रायोग करते है । साथ ही सूरदास की महिमा भी प्रकट होते है ।

मूल और अनुवाद में शब्दों का एक जैसा प्रयोग भी दिखायमान् है

दैव(पृ . सं 5) - ദൈവം (പേജ് നമ്പർ – 9)

पण्डा (पृ . सं 8) - പണ്ട (പേജ് നമ്പർ – 13)

गवंर्नमेंट (पृ . सं 359) - ഗവൺമെന്റ് (പേജ് നമ്പർ – 407)

ईसू (पृ . सं 26) - യേശു (പേജ് നമ്പർ – 32)

जाँन सेवक फाक्टरी खोलने से गाँव में होनेवाले परिवर्तन की सूचना ठाकूरदीन को  देने केलिए ऐसे कहते है ।

जाँन सेवक - तुम्हारी पान की दूकान है न ? अभी तुम दस - बारह आने पैसे कमाते होगे । तब तुम्हारी बिक्री चौगुनी हो जाएगी । इधर की कमी उधर पूरी हो जाएगी । मज़दूरों को पैसे की पकड नहीं होती । काम से ज़रा फुरसत मिली कि कोई पान पर गिरा कोई सिगरेट पर दौडा ।  खोमचेवाले की खासी बिक्रि होगी, और शराब - ताडी का पूछना ही क्या, चाहे तो पान को शराब बनाकर बेचो । गाडीवालों की मज़दूरी बढ जाएगा ।  यही मोहल्ला चौक की भांति गुलजार हो जाएगा । तुम्हारे लडके अभी शहर पढने जाते है । तब यहीं मदरसा खूल जाएगा(पृ . सं 114)

ജോൺ – നിങ്ങൾക്ക് മുറുക്കാൻ കടയില്ലേ. ഇപ്പോൾ നിങ്ങൾക്ക് ഒരു പത്തു പന്ത്രണ്ടണയിലധികം കിട്ടുന്നുണ്ടോ? ഫാക്ടറി വന്നാൽ നിങ്ങളുടെ വരവു നാലിരട്ടിയാകും. ഇവിടത്തെ കുറവ് അവിടെ പരിഹരിക്കാം. തൊഴിലാളികൾ പിശുക്കു കാണിക്കുന്നവരല്ല. ഇടയ്ക്കൽപ്പം സമയം കിട്ടിയാൽ ചിലർ മുറുക്കാൻ കടയിലെത്തും. ചിലർ സിഗരറ്റു വാങ്ങാനോടും പെട്ടിക്കച്ചവടക്കാരുടെ വില്പ്പനയും വർദ്ധിക്കും. കള്ളിന്റെയും ചാരായത്തിന്റെയും കാര്യം പറയാനാവില്ല. പച്ചവെള്ളം ചാരായമാണെന്നു പറഞ്ഞു വിൽക്കാം. വണ്ടിക്കാർക്കു കൂലി കൂടുതൽ കിട്ടും. ഈ പ്രദേശം പട്ടണം പോലെ മനോഹരമാകും. ഇപ്പോൾ നിങ്ങളുടെ കുട്ടികൾ പഠിക്കാൻ പട്ടണത്തിലെ സ്കൂളിൽ പോവുകയാണല്ലോ. അന്ന് ഇവിടെത്തെ സ്കൂളുണ്ടാവും. (പേജ് നമ്പർ – 131)

यहाँ हिन्दी के पान की दूकान के लिए मलयालम के सामाजिक परिसर की भाषा “ ‘മുറുക്കാൻകട ’ का प्रयोग किया गया है ।

हिन्दी में प्रयुक्त मदरसा के लिए मलयालम में “ സ്കൂൾ का प्रयोग है । मलयालम के मदरसा शब्द एक जाति विशेष के लोगों की पढाई से संबन्धित है । सामाजिक भेद भाव को मिटाने की अनुवादकीय कोशिश यहाँ पर है ।

देशप्रेम की विचारधारा को उजागर करने की कोशिश मूलकृति और अनुवाद में पाए जाते है ।

मातृभूमि केलिए जगत में जीना औ मरना होगा ।
(पृ . सं 28)

ജനനിയാം ജന്മഭൂമിക്കായിട്ടർപ്പിക്കുക
ജനനാൽ പരജീവിതം മരണം വരെയും (പേജ് നമ്പർ – 35)

यहाँ हमारे देश के हर एक नागरिक को अपनी संस्कृति का अवबोध मिलता है ।

ईश्वर सेवक - ईसू, मुझे अपने दामन में छुपा (पृ . सं 21)
എന്റീശോയേ, എന്നെ അങ്ങെടുത്തോളണേ
(പേജ് നമ്പർ - )

यहाँ ईसू केलिए 'എന്റീശോയേ' जैसे प्रयोग करके आम जनता के सामूहिक जीवन का यथार्थ चित्र पेश करते है ।

ताडी की दूकान (पृ . सं 15) -
കള്ളുഷാപ്പ് (പേജ് നമ്പർ – 21)

यहाँ हिन्दी के दूकान के लिए मलयालम में 'ഷാപ്പ്' शब्द का प्रयोग है ।

मलयालम के सामूहिक जीवन से जूडे हुए अनेक शब्द रंगभूमि उपन्यास के मूल ओर अनुवाद में मौजूद है । सुरदास का कथन इसका उदाहरण है ।

उदा :सूरदास, सरकार, पुरुखों की यही निशानी है, बेचकर उन्हें कौन मुंह दिखाऊगा ।

സുർദാസൻ - ഏജമാന്നേ, കാരണവന്മാരുടെ കുടുംബ സ്വത്തായിട്ടുള്ളതാണ്. അതു വിറ്റു കളഞ്ഞിട്ടു ഞാനെന്തിനു ജീവിച്ചിരിക്കുന്നു? (പേജ് നമ്പർ - )

मलयालम के सांस्कृतिक और सामाजिक धरातल पर प्रयुक्त करनेवाला ഏജമാന്നേ, കാരണവർ जैसे शब्दों के ज़रिए केरलीय जीवन की झलक प्रस्तुत करते है ।

एक ओर जगह पर ' विपत्ती ' केलिए (पृ . सं 22) -

പൊല്ലാപ്പ്(പേജ് നമ്പർ28) शब्द का प्रयोग है ।

मलयालम में विपत्ती के समानार्यक अनेक शब्द होते है । केरल के सामाजिक जीवन में प्रयुक्त बोलचाल की भाषा यहाँ प्रयुक्त की है ।

चमच (पृ . सं 50) കരണ്ടി (പേജ് നമ്പർ – 43) -

यहाँ मूल कृति के ' चमच ' केलिए अनुवाद में കരണ്ടി शब्द का प्रयोग है । मलयालम भाषा के सांस्कृतिक विशेष में കരണ്ടി था अनुयोज्य है ।

केरल के सामाजिक - सांस्कृतिक विशेषता से जुडे हुए एक ओर उदाहरण भी है

खेत कभी तनहा नहीं कटते (पृ . सं 149)

വയൽ ഒറ്റയ്ക്കും തെറ്റയ്ക്കും കൊയ്യാറില്ലാ (പേജ് നമ്പർ – 157)

मलयालम के संदर्भ में यह शब्द अपनी संस्कृति और समाज से जुडे हुए जनसामान्य को सूचित करते है ।

## 4.1.2 कर्मभूमि

सांस्कृतिक विचारधारा की भावना जितनी प्रबल होती है, उसकी सूचना कर्मभूमि में पाए जाते है ।

उदा :“ धड़ी रात रहे गंगास्नान करने चले जाते और सूयोदय के पहले विश्वनाथजी के दर्शन करके दूकान पर पहूँच जाते ”(पृ . सं 9)

വെളുപ്പാൻ കാലത്ത് ഗംഗാസ്നാനത്തിനെണീറ്റു പോകും. വെളിച്ചമാകുന്നതിനു മുമ്പ് വിശ്വനാഥദർശനം കഴിഞ്ഞ് പീടികയിലെത്തും (പേജ് നമ്പർ – 15)

यहाँ गंगा स्नान के बारे में बताते हुए धार्मिक भावना जाग्रत करते है । हिन्दी प्रदेश के लोग गंगा स्नान का लाभ उठाते है और यह उनके संस्कृति के अभिन्न अंग बन चुके है । मलयालम के वातावरण में यह भावना उतनी तीव्रतर नहीं होती ।

ससुराल की रोटियाँ तोडूं(पृ . सं 15)

ഭാര്യാവീട്ടിൽ ചെന്നു പിച്ചതെണ്ടുക (പേജ് നമ്പർ – 24)

मलयालम भाषा के सांस्कृतिक परिवेश से जुडी शब्द है 'പിച്ചതെണ്ടുക' .

पाठशाला (पृ . सं 17) പള്ളിക്കൂടം (പേജ് നമ്പർ – 25)

हिन्दी के सांस्कृतिक संदर्भ में पाठशाला उचित शब्द है । लेकिन मलयालम भाषा मेंश 'പള്ളിക്കൂടം' अपनापन महसूस होते है ।

हिन्दी के ' रूखा सूखा'(पृ . सं 20)केलिए मलयालम में 'കരിയില' (പേജ് നമ്പർ – 29) शब्द का प्रयोग है ।

'കരിയില' शब्द हमारे यानी केरल के दैनंदिन जीवन से जूडी चीज़ है । यहाँ ' अनाज के मटके '(पृ . सं 21) 'പതിര്' (പേജ് നമ്പർ – 31) है ।

केरल की संस्कृति और समाज से जुडी हुई चीज़ है शब्द 'പതിര്'

एक ओर जगह पर भी यह सांस्कृतिक अंतर  नज़र आते है जैसे

मोहनभोग खानेवाले आदमी चबैने पर नहीं गिरते
(पृ . सं 147)

ശർക്കരയുപ്പേരി തിന്നു കൊണ്ടിരിക്കുന്നവൻ
പയറുവറുത്തു കൊറിക്കാൻ പോകാറില്ല. (പേജ് നമ്പർ – 183)

केरलीय संस्कृति और ओणम से जुडी हुई चीज़ है ' ശർക്കരയുപ്പേരി ' मोहनभोगहिन्दी प्रदेश के सांस्कृतिक एवं सामाजिक जीवन के निकटतम है, उस ' ശർക्കരയുപ്പേരി 'रलीय समाज और संस्कृति से जुडे हुए है ।

'ईश्वर ' के धर से गुलामी का बीडा लेकर आये हो
(पृ . सं 157)

ദൈവത്തിന്റെ തറവാട്ടിൽ നിന്ന് അടിമപ്പണികൾ
കരാറെടുത്തു വന്നിട്ടുണ്ടോ. (പേജ് നമ്പർ -  )

यहाँ हिन्दी के धर शब्द केलिए मलयालम में ' തറവാട് ' शब्द का प्रयोग किया है । मलयालम के सामाजिक

एवं सांस्कृतिक ' തറവാട് ' डे हुए और परिवार के सुनहरी यादें प्रदान करनेवाले शब्द का प्रयोग यहाँ सर्वदा अनुयोज्य है ।

### 4.1.3. आधा गाँव ( അർദ്ധഗ്രാമം )

आधागाव उपन्यास में सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन से जुडी हुई बाते उपलब्ध है जैसे

मादरी जबान(पृ . सं 249)
മാതൃഭാഷ (പേജ് നമ്പർ – 27)

ब्रिटीश शासन के फूट डालो, शासन करो नीति के अनुसार भारत और पाक विभाजन संबंघी बहुत सारी बाते अर्धग्राम उपन्यास में चित्रित है । स्वाधीनता के बाद के देश विभाजन संबंधी समस्याओं का यथार्थवादी चित्रण ,गंगौली के मुसलमानों का निजी जीवन एवं मनस्थितियों , गंगौली के हिन्दू - मुस्लीम लोगों के आपसी रिरते आदि का सहज चित्रण यहाँ मिलते है ।

फून्ननमियाँ, द्वारा पण्डित मातादीन के प्रसंग का परामर्श इस प्रकार है । " त मातादीन पंडित तकरीर कहिन ।

कहिन की मलिच्छ मुसलमानों को भारतवरश से निकाल देवे को चाहिए । अउर ई बहनचोद को मंदिर बनाये के वास्ते ज़मीन हम दिया रहा । खाये - पीये को दस मंडा ज़मीन अलग से दिया । अउर ई साला तकरीर कर रहा, अउर ईहो ना , सोच रहा की आखीर फुन्नन तो मुसलमानो हैं ।"(पृ . सं 271)

പണ്ഡിറ്റ് മാതാദീൻ പ്രസംഗിക്കുകയാണ് മേച്ഛന്മാരായ മുസ്ലീങ്ങളെ ആർഷഭാരതത്തിൽ നിന്നു തന്നെ തുടച്ച് നീക്കണമെന്ന് ആ തെമ്മാടിക്ക് അമ്പലം പണിയാൻ ഞമ്മളാ സ്ഥലം കൊടുത്തത്. പുറമെ ചെലവിനായി പത്തുപറനിലം ബേറേം കൊടുത്തു. എന്നിട്ട് ആ ഹമക്ക് പ്രസംഗിച്ചപ്പോ ഫുന്നൻമിയം മുസ്ലീമാണെന്നു പോലും ഓർത്തില്ല. (പേജ് നമ്പർ – 295)

गंगोली तो एक संस्कृति का प्रतीक है । ब्रिटीश सरकार के ' डिवैड एण्ड रूल ' के कारण गंगोली के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में तनाव पैदा हो गयी थी ।

प्रस्तुत उपन्यास में ' मुहरं ' समय को सूचित करनेवाला प्रतीक है । मुस्लीम लीग और जिन्ना के मनोभाव भी

मुसलमान को अपना देश हाज़िल करने की विचारधारा को बल दिया । ब्रिटीश सरकार के कूट राजनीति की परिणती के फलस्वरूप भारत की विभाजन की समस्या उभरकर आयी । भारत के सांस्कृतिक समन्वय को नष्ट भ्रष्ट करनेवाली यह प्रवृत्ति का यथार्थ चित्रण उपन्यास में व्यक्त बै ।

मूलकृति के शब्दों को अनूदित करते वक्त मूल की गरिमा बढने ओर गढने की प्रवृत्ती होती है, जैसे :-

चलनी की भाति छिद्रो से भरा हुआ तवा(पृ . सं 12)

അരിപ്പ പോലെ തുളവീണ ഒരു ദോശക്കല്ല്(പേജ് നമ്പര് 16)

यहाँ अर्थाभाव अपनी कठोरता प्रकट करती है । मलयालम की सांस्कृति में ദോശക്കല്ല് आत्मीयता ध्योतित करनेवाले, परिवार के निकटवर्ती प्रतीत होते है ।

## 4.2 समानताएँ

### 4.2.1 रंगभूमि

रंगभूमि उपन्यास के मूल और अनुवाद पर विचार किया जाए तो पता चलता है कि दोनों में काफी समानताएँ भी पाए जाते है ।

जब मिस्टर क्लार्क द्वारा सुरदास की हत्या हुई भी, तब राजा महेन्द्रकुमार और क्लार्क के बीच यह बातचित हुई थी । " लौटते समय मि. क्लार्क ने राजा महेन्द्रकुमार से कहा - मुझे इसका अफसोस है कि मेरे हाथों से ऐसे अच्छे आदमी की हत्या हुई । राजा साहब ने कुतूहल से कहा - सौभाग्य कहिए, दुर्भाग्य क्यों ?"

कलार्क - नहीं राजा साहब, दुर्भाग्य ही है । हमें आप - जैसे मनुष्य से भय नहीं, भय ऐसे ही मनुष्य से है , जो जनता के हृदय पर शासन कर सकते है । यह राज्य करने का प्रायश्चित है कि इस देश में हम ऐसे आदमियों का वध करते हैं, जिन्हें इंग्लैड में हम देव-तुल्य समझते ।(पृ . सं 416)

मलयालम अनुवाद में भी यह समान रूप से चित्रित है -

മടങ്ങുന്ന സമയത്ത് മിസ്റ്റർ ക്ലാർക്ക് മഹേന്ദ്രകുമാരനോടു പറഞ്ഞു. " എന്റെ കൈ കൊണ്ട് ഈ ഒരു നല്ല മനുഷ്യൻ മരിക്കേണ്ടി വന്നതിൽ എനിക്കു വലിയ ഖേദമുണ്ട്. "

രാജാസാഹിബ്ബ് കൗതുകം പൂണ്ടു. " സൗഭാഗ്യമെന്നു പറയൂ, ഖേദിക്കാൻ എന്തിരിക്കുന്നു?. "

ക്ലാർക്ക് :- അല്ല രാജാസാഹിബ്ബ് ഖേദിക്കാനുണ്ട്. ഞങ്ങൾക്ക് നിങ്ങളെപ്പോലെയുള്ള മനുഷ്യരെ പേടിയില്ല. ഈ മാതിരി ജനങ്ങളുടെ ഹൃദയത്തെ കീഴടക്കാൻ കഴിയുന്ന മനുഷ്യരെയാണ് പേടിയുള്ളത്. ഇംഗ്ലണ്ടിലായിരുന്നെങ്കിൽ ഞങ്ങൾ ദേവതുല്യരായി കരുതുമായിരുന്ന മനുഷ്യരെ ഈ നാട്ടിൽ കൊല്ലേണ്ടി വരുന്നത് രാജ്യം ഭരിക്കുന്നതിന്റെ പ്രായശ്ചിത്തമാണ്. (പേജ് നമ്പർ 472)

यहाँ अंग्रेज़ों के कूट राजनीति का पता चलता है ।

## 4.2.2 कर्मभूमि

कर्मभूमि उपन्यास के मूल और अनुवाद में कई बातों में समानता पाए जाते है । अमरकान्त जब अपनी पत्नी सुखदा को छोडकर , सकीना के प्रति व्यार करने लगे तो धर्म के नाम पर उसके मन में विचित्र विचारधारा

प्रकटहुई:-

" वह धर्म के पीछे लाठी लेकर दौडने लगा । धन के बन्धन का उसे बचपन ही से अनुभव होता आया था । धर्म का बन्धन उससे कहीं कठोर, कहीं असह्य,कहीं निर्भय था । धर्म का काम संसार में मेल और एकता पैदा करना होना चाहिए । यहाँ धर्म ने विभिन्नता और द्वेष पैदा कर दिया है । क्यों खान - पान में , रस्म-रिवाज़ में धर्म अपनी टांगें अडाता है ? मैं चोरी करूं, खून करूं, धोखा दूं, धर्म मुझे अलग नहीं कर सकता । अछूत के हाथ से पानी पी लूं, धर्म छू-मन्तर हो गया । अच्छा धर्म है । हम धर्म के बाहर किसी आत्मा का सम्बन्ध भी नहीं कर सकते । आत्मा को भी धर्म ने बांध रखा है प्रेम को भी जकड़ रखा है । यह धर्म नहीं, धर्म का कलंक है । "(पृ . सं 74, 75)

അമരക്കാന്തൻ മതത്തിന്റെ നേരെ വാളെടുക്കാൻ തുടങ്ങി. ധന ത്തെക്കുറിച്ച് കുട്ടിക്കാലം മുതൽക്കു തന്നെ അനുഭവമുണ്ടായി രുന്നു. മതത്തിന്റെ കെട്ടുപാട് അതിനേക്കാൾ എത്രയോ കൂടുതൽ കഠോരവും നിരർത്ഥവും സഹിക്കവയ്യാത്തതുമായിരു ന്നു. മതത്തിന്റെ ജോലി ലോകത്തിൽ ഒരുമയും ചേർച്ചയുമുണ്ടാ ക്കലായിക്കണം. ഇവിടെ മതം വിഭിന്നവും വിദ്വേഷവുമുണ്ടാക്കി യിരിക്കയാണ്. ഉടുപ്പിലും നടപ്പിലും തീനിലും കുടിയിലുമെല്ലാം മതമെന്തിനു കൈകടത്തുന്നു? ഒരാൾ കട്ടാലും തട്ടിപ്പറിച്ചാലും കുത്തികൊല നടത്തിയാലും മതത്തിൽ നിന്ന് അയാളെ പുറം തള്ളുകയില്ല. അയിത്തക്കാരന്റെ കൈയിൽനിന്നു വെള്ളം വാങ്ങി ക്കുടിച്ചാൽ മതഭ്രഷ്ടനായി. നല്ല മതം ! നമുക്കു മതത്തിനു് പുറത്ത് ആരോടും ആത്മബന്ധം സ്ഥാപിക്കാൻ വയ്യ. ആത്മാ വിനെത്തന്നെ മതം ബന്ധനത്തിലാക്കിയിരിക്കയാണ്. പ്രേമ ത്തേയും ചങ്ങലയിട്ടുവെച്ചിരിക്കുന്നു. ഇതു മതമല്ല, മതത്തിന്റെ പേരിലുള്ള കളങ്കമാണ്. (പേജ് നമ്പർ 91)

यहाँ छूआछूत और धार्मिक कट्टरता की खबर मिलती है ।

जब समरकान्त मन्दिर के द्वारखूलवाने का विरोध किया तब उनके पुत्र अमरकान्त की पत्नी सुखदा पूछती है - “कयों लालाजी, रक्त की नदी बह जाये, पर मन्दिर का द्वारा न खूलेगा ? समरकान्त ने अविचलित भाव से उत्तर दिया -

क्या बकति है बहू, इन डोम - चमारों को मन्दिर में धुसने दे ? तू तो अमर से भी दो - दो हाथ आगे बढी जाती है । जिसके हाथ का पानी नहीं पी सकते, उसे मन्दिर में कैसे जाने दें ?"(पृ . सं 161)

സമരകാന്തന് ഇളക്കമുണ്ടായില്ല – " എന്താണു ചിലയ്ക്കുന്നത് ? ഈ കണ്ട പറയനും പുലയനും അമ്പലത്തിൽ കടക്കുകയോ ? നീ അമരനെക്കാൾ രണ്ടു മുഴം മുമ്പിലേക്കാണു കയറുന്നത്. എടീ, കുടിക്കുന്ന വെള്ളം തൊടാൻ പാടില്ലാത്തവർ അമ്പലത്തിൽ കടക്കുകയോ ?" (പേജ് നമ്പർ 200)

यहाँ भी दोनों भाषाओं में छूआ छूत और धार्मिक पाखण्डता पाए जाते है ।

### 4.2.3 आधागाँव

आधागाँव में सामाजिक विषयों को लेकर कई जगहों पर परामर्श है । जैसे चुनाब के बारे में और वोट देने के बारे में बातें करने केलिए दो लोग अलीगढ से गंगोली आए थे ।

“ हम लोग अलीगढ से रहे है । ” एक लडके ने कहा ।

“ ए साहब, का हुआँ छुट्टी ता नहीं  हैआजकल ?” कम्मे ने सवाल किया ।

“ जी, नहीं । ” दूसरा बोला, “ छुट्टी तो नहीं है मगर आपने सुना होगा कि एलेक्शन होनेवाले हैं । ”

“ ई त हमहूँ सुन रहें । ”

“ आपके वालिद और वालिदा भी वोटर हैं ।”

---

“ अच्छा, ई बताइए की अलीगढ पाकिस्तान चला जइहे की हिअई रहिये ?”

“ हम लोगो की कोशिश तो यही है कि अलीगढ पाकिस्तान में शामिल हो तो जाय । क्योंकिवह इस्लामी तहज़ीब का एकरोशन मिनारा है । ”

“ मिनारा ?” कम्मो हैरान हो गया, “ ए साहब,  हम त सुना रहा कि हुआँ एक ठो उनीवरसीटी है । अउर आप कह रहें कि ऊ रोशन मिनारा है । ”

“ ए साहब, सुनिए हमरी सीधी बात ”,“ अगर अलीगढ पाकिस्तान में जाय़ को होये त साफ - साफ बता दी जिए । काहे मारे, कि तब हमरे वालिद अउर हमरी वालदा आपको ऑट ना दे सकते । ?”

“ जी ?” एक ने सवाल किया ।

पाकिस्तान न बना तो ये आठ करोड मुसलमान यहाँ अछूत बनाकर रखे जाएँगे ।“ दुसरा बोला ।

“ ए भाई, हम्में त अइसा लग रहा कि आप लोगन का पढा लिक्खा सब बेकार भया । काहे मारे, कि आप लोगन को त - ईहो ना मालुम, कि भंगी - चमार अछूत होते है । हम कउनो भंगी - चमार है ? अ जो अछूत होइबे ना करीहे, ओको कोई अछूत कइसे बना दीहे साहब ? आपे बताइये, तनी हमहूँ सुनें ”

(पु. स. 239 - 240)

मलयालम अनुवाद में भी इसी तरह का चित्रणहै ।

" നമ്മൾ അലിഗഢിൽ നിന്നും വരികയാണ്. " ഒരുവൻ പറഞ്ഞു

" എന്താ, ആ്ടെ അബധിയാ ? " കമ്മോ ചോദിച്ചു

" ഏയ് , അല്ല " മറ്റേ യുവാവ് പറഞ്ഞു. " അവധിയൊന്നുമല്ല.

പിന്നെ ഇലക്ഷന്റെ കാര്യം അറിഞ്ഞിരിക്കുമല്ലോ ?"

" അത് ഞമ്മളറിഞ്ഞു. "

" നിങ്ങളുടെ ബാപ്പയ്ക്കും ഉമ്മയ്ക്കും വോട്ടുണ്ട് "

" ശരി, അലിഗഢ് പാകിസ്ഥാനി പോവോ അതോ ഇ്ടെത്തന്നെ
കാണോ ?"

" അലിഗഢിനയും പാകിസ്ഥാനിലുൾപ്പെടുത്താനാണ് നമ്മുടെ
ശ്രമം. കാരണം അത് മുസ്ലീം സംസ്ക്കാരത്തിന്റെ കോട്ടയാണ്. "

" കോട്ട ?" കമ്മോ അതിശയിച്ചു പോയി. " ആടെ ഒരു
യൂണിവേഴ്സിറ്റിയാണെന്നാണല്ലോ കേട്ടിട്ടുള്ളത്.
ങ്ങളതിനെ കോട്ടയെന്നു പറയുന്നോ.?"

" ഏയ് സാഹബ്, ഞമ്മളു കാരിയം തുറന്നു പറയാം " കമ്മോ ഇടയ്ക്കു കയറി പറഞ്ഞു. " അലിഗഢ് പാകിസ്ഥാനിലേക്കു പോകുമോയെന്ന് കൃത്യമായി പറയണം. എന്നാലേ ഞമ്മന്റെ ഉമ്മേം ബാപ്പേം ങ്ങക്ക് വോട്ട് തരുമോന്ന് പറയാപറ്റൂ. "

" പാകിസ്ഥാനുണ്ടായില്ലെങ്കി എട്ടുകോടി മുസ്ലീങ്ങൾ ഇവിടെ തൊട്ടുകൂടാത്തവരായി കഴിയേണ്ടി വരും " രണ്ടാമൻ പറഞ്ഞു.

" ഏയ് സാഹബ്, തോട്ടികളും ചെരുപ്പുകുത്തികളുമാണ് തൊട്ടുകൂടാത്തവരെന്ന് അറിയില്ലെങ്കിപ്പിന്നെ ങ്ങളെന്തിനാ ബെറുതെ ഇത്രേം പഠിച്ചത്. ഞമ്മള് തോട്ടിയോ ചെരുപ്പുകുത്തിയോ മറ്റോ ആണോ? തീണ്ടായില്ലാത്തബർക്ക് അതുണ്ടാക്കാൻ ആരിക്കു കഴിയും? ങ്ങളുതന്നെ പറ ഞമ്മളും അറിയട്ടെ." (പേജ് നമ്പർ - 259)

यहाँ हिन्दी में यूनिर्वसिटी केलिए ' उनीवरसीटी ' जैसे आम भाषा का प्रयोग करके गंगोली की निष्कपटता को सूचित करते है । गंगोली एक ऐसा देश है जहाँ आदमी अपने को चमार मुस्लीम या हिन्दु कहकर नहीं अपने धर के सदस्य समझकर जीते है । लेकिन यहाँ धार्मिक जगत के भ्रष्टाचार यानी छुआछूत की समस्या

सामने लाने की कोशिश करते है । साथ ही भारत के विभाजन की भीषण समस्या भी सामने आती है ।

विभाजन की समस्या में अग्रेज़ों का हाथ यहाँ व्यक्त होते है, जैसे - मस्जिद में नमाज़ के समय दो आदमी पहूँच गये । वह दोनों नमाज़ के बाद खडा होकर कुछ कहना शुरु किया -

" यह तो आप लोगों को मालुम ही होगा कि आजकल पूरे मुल्क में मुसलमानों की ज़िन्दगी और मौत की लड़ाई छिडी हुई है । तकरीर शुरु हो गयी, "" हम ऐसे मुल्क में रहते हैं जिसमें हमारी हैसियत दाल में नमक से ज्यादा नहीं है । एक बार अंग्रेज़ों का साया हटा तो ये हिन्दु हमें खा जायेंगे । इसलिए हिन्दुस्तानी मुसलमानों को एक ऐसी जगह की ज़रूरत है जहाँ वह इज्जत से जी सकें । मैं यह नहीं कहता कि खालिद - बिन - बलीद्र और मुहम्मद - बिन - कासिम - की औलाद हिन्दुओं से डरती है । "(पृ . सं 242, 43)

" ഇപ്പോൾ രാജ്യത്തെ മുഴുവൻ മുസ്ലീങ്ങളും ജീവന്മരണ പോരാട്ടത്തിൽ ഏർപ്പെട്ടിരിക്കുകയാണെന്ന കാര്യം നിങ്ങൾക്കേവർക്കും അറിവുള്ളതാണല്ലോ" പ്രസംഗം ആരംഭിച്ചു " നമ്മൾ വസിക്കുന്ന ഈ ദേശത്ത് നമ്മുടെ സ്ഥാനം കറിയിലെ കറിവേപ്പിലയുടേതാണ്. ബ്രിട്ടീഷുകാരുടെ തണൽ നഷ്ടമാകുന്നതോടെ അവർ നമ്മെ വലിച്ചുദൂരെ കളയും. അതിനാൽ ഭാരതത്തിൽ മുസ്ലീങ്ങൾക്കു അഭിമാനത്തോടെ താമസിക്കാൻ യോഗ്യമായ ഒരു സ്ഥലം ആവശ്യമാണ്. ഖാലിദ് - ബിൻവലീദിന്റെയും മുഹമ്മദ്-ബിൻകാസിമിന്റെയും മക്കൾ ഹിന്ദുക്കളെ ഭയക്കുന്നുവെന്നല്ല ഞാൻ പറഞ്ഞതിന്റെ അർത്ഥം "
(പേജ് നമ്പർ - 263)

यहाँ साँप्रदायिक फसाद फैलवाने की कोशिश मूल कृति और अनुवाद में पाए जाते है । साथ ही ब्रिटीश शासन के प्रति लगाव भी नज़र आते है । विभाजन की समस्या संपूर्ण भारत को किस तरह छकनाछूर कर देगा, इसकी सूचना भी मिलते है ।

लेकिन कहीं कहीं देशीयता को उजागर करने की प्रवृत्ति मूल और अनुवाद में मिलते है । पाकिस्तान और जिन्ना के बारे में परामर्श होते वक्त तन्नू इस प्रकार कहते है - " देखिये चा जो कुछ मैंने देखा है, वह आपने नहीं देखा है । इसलिए जो कुछ में देखा सकता

हूँ , वह आप नहीं देख सकते । नफरत और खौफ की बुनियाद पर बनने वाली कोई चीज़ मुबारक नहीं हो सकती । पाकिस्तान बन जाने के बाद भी गंगौली यहीं हिन्दुस्तान में रहेगा और गंगौली फिर गंगौली है । तब अगर गयवा अहीर, लखना चमार और छिकुरिया भर ने आपसे पूछा कि उन्होंने तो आपसे कभी दुश्मनी नहीं की थी, फिर अपने पाकिस्तान को वोट क्यों दिया, तो आप क्या जवाबदेगे? "(पृ . स. )

" നോക്കു ഇളയാപ്പാ, ഞാൻ കണ്ടിട്ടുള്ളതൊന്നും അങ്ങു കണ്ടിട്ടില്ല. അതുകൊണ്ടുതന്നെ എനിക്കു കാണാൻ കഴിയുന്നതു അങ്ങേക്കു കാണാൻ കഴിയുകയുമില്ല. വെറുപ്പിന്റെയും ദേഷ്യത്തിന്റെയും അടിത്തറയിൽ ഉണ്ടാക്കുന്നതൊന്നും ഗംഗൗലി ഭാരതത്തിൽ തന്നെയായിരിക്കും. ഗംഗൗലി ഗംഗൗലി തന്നെയായിരിക്കും. അന്ന് ഇടയൻ ഗയയോ ചെരുപ്പുകുത്തി ലഖ്നയോ ഛികുരിയയോ നിങ്ങളോട് നമ്മൾ ങ്ങളെ ദ്രോഹിച്ചിട്ടില്ലല്ലോ എന്നിട്ടും നിങ്ങൾ എന്തുകൊണ്ട് പാകിസ്ഥാന് വോട്ട് ചെയ്തുവെന്ന് ചോദിച്ചാൽ നിങ്ങളെന്ത് ഉത്തരം നൽകും ?" (പേജ് നമ്പർ - )

गंगौली यानी अपने देश के प्रति प्यार की भावना यहाँ व्यक्त है ।

# पाँचवाँ अध्याय

## 5.0 बहुभाषिक बहुसांस्कृतिक समाज में अनुवाद की प्रासंगिकता

अनुवाद मानव के मौलिक कार्य कलापों में एक है । हम भाषा द्वारा अपने आन्तरिक विचारों और धारणावों का आदान प्रदान कर सकते है । एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करते वक्त यह बात अधिक सुव्यक्त होते है ।

### 5.1 भाषापरक अध्ययन

बहुभाष देश भारत में विभिन्न भाषा भाषी लोग एक साथ रहते है । विभिन्नता में एकता लाना अनुवाद द्वारा संपन्न होता है ।अनुवाद पर विचार करते वक्त भाषा की विशेषता पर ध्यान देना अनिवार्य है । आज अनुवाद की महिमा सर्वव्यापी बन गयी है ।आज अनुवाद ने विश्व अर्थव्यवस्था में सेतु के रूप में केवल अपनी अलग पहचान ही नहीं बनाई है अपितु अपनी अवश्यम्भाविता को भी सिद्ध कर दिखाया है ।

अनुवाद को भाषाशास्त्रीय दृष्टि से जाँचने और परखने की परंपरा भाषाशास्त्र में उपलब्द्ध है । अतः अनुवाद और भाषा का निकट सबंद्ध है ।

वर्तमान संदर्भ में अनुवाद भाषाविज्ञान का एक अलग अंग बन गया है । भाषा के सामाजिक , सांस्कृतिक और ऎतिहासिक स्वरूपों की दृष्टि से अनुवाद और भाषा के परस्पर संबंद्ध, उसका विश्लेषण आदि भाषाविज्ञान के विषय बन जाते है ।

अनुवाद की भाषापरक विशेषता पर ध्यान देते वक्त रंगभूमि उपन्यास में कुछ भाषात्मक विशेषताएँ पाए जाते है । वास्तव में एक देश की भाषा वहाँ के समाज एवं संस्कृति का प्रतिनिधित्व करता है । उपन्यास में विभिन्न स्तर के लोग विभिन्न भाषा का प्रयोग करते है ।

उदा : सोफिया - पापा का नाम मि. जाँन सेवक है। हमारा बंगला सिगरा में है । (पृ . सं 29)

यहाँ अंग्रेज़ी का प्रभाव है ।

लेकिन सूरदास जैसे भीखमगे की भाषा साधारण बोलचाल की भाषा है ।

उदा : दयाशिरि - इधर कहां चले सुरदास ?
तुम्हारी जगह तो पीछे छूट गई ।

सुरदास - ज़रा इन्हीं मियां साहब से कुछ बातचीत करनी है ।

दयाशिरि - क्या इसी ज़मीन के बारे में ?

सुरदास - हां, मेरा विचार है कि यह ज़मीन बेचकर कहीं तीर्थयात्रा करने चला जाऊ । इस मुहलले में अब निबाह नहीं है । (पृ . सं 48)

ദയാഗിരി - ഇവിടെയെവിടേയ്ക്കു സൂരദാസൻ

സൂരൻ - ഇവിടംവരെത്തന്നെ മുതലാളിയെ ഒന്നു കാണേണ്ട കാര്യമുണ്ട്

ദയാഗിരി - ആ ഭൂമിയുടെ കാര്യമുണ്ട്

സൂരൻ - അതെ അതു വിറ്റു വല്ല തീർത്ഥയാത്രയ്ക്കും തിരിക്കാമെന്നാണു വിചാരികികുന്നത് ഈ പ്രദേശത്ത് ഇനി താമസിക്കാൻ വയ്യ

(പേജ് നമ്പർ - 57)

भारत की अनुवाद परंपरा को देखा जाए तो पता चलता है कि अनुवाद का क्षेत्र काफी विस्तृत है । भारतीय भाषाओं से विदेशी भाषाओं में, विदेशी भाषाओं से भारतीय भाषाओं में अनुवाद कार्य होता रहा । आज अनुवाद की विकास यात्रा का स्वर्ण युग है । आज विश्व की किसी भी भाषा का उत्कृष्ट साहित्य विश्व की किसी भी भाषा में उपलब्ध है । कम्पुटरीकरण की प्रगति ने अनुवाद के सामने एक चुनौती प्रस्तुत कर दी है । यह अनुवाद को ओर भी सरल बना दिया है ।

## 5.2 मुहावरे तथा लोकोक्तियॉ

भाषा को सजीव बनाने में मुहावरे और लोकोक्तियों का बड़ा हाथ है जैसे ;-

1. सांप के मुह में ऊगली डालना (पृ . सं 24)

പാമ്പിന്റെ അളയിൽ വിരലിടുക (പേജ് നമ്പർ – 30)

2. ऊट का सुई की नोक में जाना (पृ . सं 21)

ഒട്ടകത്തിനു സൂചിക്കുഴയിലൂടെ കടക്കുക (പേജ് നമ്പർ – 27)

3. केले केलिए ठीकरा भी तेज़ होता है (पृ . सं 46)

നനഞ്ഞ മണ്ണു കുഴിക്കാനെളുപ്പമാണ് (പേജ് നമ്പർ – 55)

मुहावरे तथा लोकोतियॉ हर  भाषिक सामुदायिक जीवन से घुलमिल शैलियाँ है ।उसका प्रभाव जनजीवन पर गहरा है । समानार्थी होने पर भी शब्दान्तर इनमें वर्त्तमान रहता है ।

# उपसंहार

विश्वमण्डल को जोडनेवाली भाषाई प्रक्रिया है अनुवाद । अनुवाद भाषाओं को मिलाने में सेतु का कार्य कर रहे है । भारत जैसे बहुभाषा देश में अनुवाद का क्षेत्र विस्तृत है । अनुवाद द्वारा व्यक्ति - व्यक्ति के बीच , व्यक्ति - समाज के बीच , समाज - राज्य के बीच और राज्य - राष्ट्र के बीच की दूरी कम होती है । समकालीन परिसरमें अनुवाद का महत्व बढता जा रहा है ।

भारत में अनुवाद का चरित्र वैदिक काल से माने जाते है । प्रारंभ में विश्व साहित्य की विभिन्न कृतियों का अनुवाद भारतीय भाषाओं में हुई थी । बाद में विभिन्न भारतीय भाषाओं के बीच अनुवाद कार्य हुआ । मूलकृति को लक्ष्य भाषा में अनूदित करते वक्त भाषा के साथ संस्कृति का भी अनुवाद होता है ।क्योंकि प्रत्येक देश की अपनी संस्कृति होती है । अनुवाद द्वारा मूल और अनुदित कृति के सामाजिक, सांस्कृतिक परिसर को परखने का अवसर प्राप्त होता है ।

यहाँ प्रेमचंद के रंगभूमि, कर्मभूमि और राही मासूम रज़ा के आधा गांव पर विचार किया है । प्रत्येक कृति की अपनी प्रधानता होती है । अनुवाद करते वक्त सामाजिक, सांस्कृतिक धरातल पर समस्याएँ उत्पन्न होना स्वाभाविक है । यह समस्या आर्थिक संकट, राजनैतिक संधर्ष, धार्मिक पाखण्ड आदि कारणों से तीव्रतर होती जा रही है । आम जनता के जीवन से जुडी हुई बातों का अनुवाद भी संभव है । हिन्दी भाषी प्रदेश के लोग देशीयता के बोध से जिस तरह तीव्रतर होती जा रहीहै , वही भावना मलयालम अनुवाद में भी है ।

भाषापरक दृष्टि से देखा जाए तो पता चलता है कि प्रत्येक देश की भाषा में वहाँ की संस्कृति की महक होना स्वाभाविक है । मूल कृति के संस्कृति में प्रयुक्त शब्दों का अनुवाद करते समय समस्याएँ होना स्वाभाविक है । यहाँ त्याग और बलिदान को जीवन का परम लक्ष्य माननेवाले बहुत सारे पात्र आते है । इसी बलिदान की भूमि पर भारतीय संस्कृति की महक चारों तरफ फ़ैल रही है । प्रेमचंद के रंगभूमि उपन्यास के मूल और अनुवाद में भाषात्मक एकता एवं अनेकता

नज़र आते है । भारतीय संस्कृति से अधिक पश्चिम की संस्कृति को प्रधानता देने कीप्रवर्ती यहां दिखायमान है ।

कर्मभूमि उपन्यास में सामाजिक ,सांस्कृतिक परिसर में उत्पन्न समस्या एवं समाधान चित्रित है । व्यक्ति की संघर्षोन्मुख चेतनाउनके ज़िन्दगी को किस मोड पर लाकर खड़ा कर देगा, इसका यथार्थवादी चित्र यहां उपलब्द है ।देशीयता का बोध होना समाज के हित केलिए परम आवश्यक है । यह वर्तमान युग में अति आवश्यक है ।

राही मासूम रज़ा के आधागाँव में देशीयता की समस्या अधिक तीव्रतर होती है ।साम्प्रदायिकता की जड़ें समाज में सदैव वर्तमान है । हमारी मिटटी की सुगंध को बरकरार रखने कीकोशिश उपन्यास में चित्रित है । समकालीन परिसर में यह अधिक प्रासंगिक है । इसके मूल में विभिन्न भाषा भेदों का प्रयोग मिलते है । अनुवाद में भाषा की बारीकी को तोडकर जिस प्रकार ' अर्धग्राम ' की रचना की गयी है , इसे देखकर पता चलता है कि मलयालम भाषी लोग

भाषा की संकीर्णता के जंझाल से मुक्ति पायी है । लेकिन ' गंगोली ' की जो माधुर्य होती है उसकी तीव्रता अनुवाद में भाषापरक दृष्टि से कम नज़र आती है ।

बहुभाषीक ,बहुसांस्कृतिक प्रदेश की बहुस्वरता को वसुदैव कुदुम्बकम के व्यापक परिप्रेष्य में प्रस्तुत करने में अनुवाद विज्ञान का योगदान सर्वाधिक महत्वपूर्ण है । समय, संदर्भ, देश काल, वर्ग ,नस्ल ,लिंग ,धर्म आदि पर अधिष्ठित भेदभाव मिटाने में और सामाजिक ,सांस्कृतिक परिसर को चेतावनी देने में अनुवाद का महत्वपूर्ण योगदान रहा है । समकालीन परिसर में यह सर्वदा अनुयोज्य है ।

# सन्दर्भ सहायक ग्रन्थ सूची

## मूल ग्रन्थ

1. कर्मभूमि — प्रेमचंद
मनोज पब्लिकेशन
761,मेन रोड,बुराड़ी
दिल्ली 110084,2013

2.रंगभूमि — प्रेमचंद
मनोज पब्लिकेशन
761,मेन रोड,बुराड़ी
दिल्ली 110084,2013

3.आधा गाँव — राही मासूम रज़ा
राजकमल प्रकाशन प्रैवट लिमिटेड
1 - बी ,नेताजी सुभाष मार्ग
दरियागंज ,नईदिल्ली ,1966

4. കർമ്മഭൂമി — ഇ. കെ. ദിവാകരൻ പോറ്റി
സാഹിത്യ പ്രവർത്തക സഹകരണ സംഘം
കോട്ടയം, കേരള, 1963

5. രംഗഭൂമി — ഇ. കെ. ദിവാകരൻ പോറ്റി
കേരള സാഹിത്യ അക്കാദമി
തൃശ്ശൂർ, കേരള, 1976

6. അർദ്ധഗ്രാമം — ബിന്ദുവെൽസാർ
നാഷണൽ ബുക്ക് ട്രസ്റ്റ്
ഇന്ത്യ, 2005

# आलोचनात्मक ग्रन्थ

## हिन्दी


1. अनुवाद शिल्प समकालीन सन्दर्भ — डॉ कुसुम अग्रवाल, साहित्य सहकार 29/62-बी गली न .11,विश्वास नगर दिल्ली ,1999

2. अनुवाद विज्ञान — डॉ भोलानाथ तिवारी शब्धकार,159 ,गुरु अंगद नगर दिल्ली -10092 1998

3. अनुवाद भाषाएं-समस्याएं — एन इ विस्वनाथ अय्यर ज्ञान गंगा, 205-सी चावडी बाज़ार ,दिल्ली -06 1992

4. अनुवाद क्या है ? — डॉ राजमल बोरा वाणी प्रकाशन ,21 ए दरियागंज दिल्ली 1996

,

5. भारतीय भाषाओं से हिन्दी अनुवाद की समस्याएं — डॉ भोलानाथ तिवारी
2203 ,शब्धकार, गली डकोतान
तुर्कमान गेट ,दिल्ली -06,1984

6.अनुवाद - कार्यदक्षता भारतीय भाषाओं की समस्याएं — डॉ राम गोपाल सिंह जादौन
वाणी प्रकाशन ,21 ए
दरियागंज नई दिल्ली ,1996

## अंग्रेज़ी

1. Basnett Susan ,(1980 ) ,Translation studies,London and Newyork,Methuen

2.Godard Barbara, Culture as Translation Ramakrishna Shantha(ed) (1997),Translation and Multilingualism ,Pencraft International,b-1/41 Ashok Vihar II Delhi-110052

3. Venuti.L (1 9 9 5 )The Translators Invisibility :A History of Translation , London and New York ,Routledge

4. Said Edward,(1993),Culture and Imperialism,London:Chatto and Windus

5. Baker .M(ed)91 9 9 8 )Encyclopedia of Translation Studies, London and Newyork,Routledge